दांपत्य संबंधों के कथाकार: मोहन राकेश

प्रणति बेहेरा, डॉ गीता कपिल

शोधार्थी

हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

वनस्थली विद्यापीठ

शोध निर्देशक

हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

वनस्थली विद्यापीठ

शोध सार:

मोहन राकेश (1925-1972) हिंदी साहित्य के नई कहानी आंदोलन के प्रमुख स्तंभ थे। वे कहानीकार, उपन्यासकार और नाटककार के रूप में ख्याति प्राप्त थे, लेकिन उनकी रचनाओं में दांपत्य संबंधों का चित्रण सबसे गहरा और यथार्थवादी है। उन्होंने मध्यवर्गीय जीवन की जटिलताओं, वैवाहिक संबंधों की टूटन, एकाकीपन और आधुनिक युग की मानसिक उलझनों को बड़ी संवेदनशीलता से उकेरा।

मोहन राकेश का जीवन और वैयक्तिक अनुभव

मोहन राकेश का जन्म 8 जनवरी 1925 को अमृतसर में हुआ था। वे मूलत: सिंधी परिवार से थे। उनका व्यक्तिगत जीवन भी दांपत्य संबंधों की उथल-पुथल से भरा रहा। उन्होंने कई विवाह किए, जो सफल नहीं रहे। इन व्यक्तिगत अनुभवों ने उनकी रचनाओं में गहराई दी। उनकी कई कहानियां और नाटक उनके जीवन के द्वंद्वों की झलक दिखाते हैं।

कहानियों में दांपत्य संबंधों का चित्रण

मोहन राकेश की कहानियां पारंपरिक रोमांटिक दांपत्य की बजाय आधुनिक शहरी मध्यवर्ग के वैवाहिक जीवन की कटु सच्चाई को उजागर करती है। यहां संबंध मधुरता की जगह तनाव, असमंजस, एकाकीपन और असफलता से भरे होते हैं।

एक और ज़िंदगी: उनकी प्रसिद्ध कहानी, जिसमें विवाह के बाद की निराशा और नई ज़िंदगी की खोज का चित्रण है। यह कहानी उनके अपने जीवन से प्रेरित मानी जाती है। इस कहानी के नारी पात्र बीना एक आधुनिक नारी की प्रतिनिधि है। प्रकाश और बीना पति-पत्नी हैं ।उनका संबंध ऐसा था कि “विवाह के कुछ महीने बाद से ही पति- पत्नी अलग-अलग रहने लगे थे। विवाह के साथ जो सूत्र जुड़ना चाहिए था वह जुड़ नहीं सका था। दोनों अपना-अपना स्वतंत्रत ताना-बाना बुनकर जी रहे थे। लोकाचार के नाते साल छ: महीने में कभी एक बार मिल लिया करते थे। वह लोकाचार ही इन बच्चे को संसार में लाया था। बीना समझती थी कि इस तरह जान बूझकर उसे फँसा दिया गया है। प्रकाश सोचता था कि अनजाने में ही उससे एक अपराध हो गया है।”1 परिस्थितियों में विषम चक्र में नारी न प्रेमिका हो पाती है, न पत्नी। सामाजिक बंधन उसे किसी की पत्नी बना देते हैं, जब कि मन की स्वाभाविक भावनाल्टएँ उसे किसी और से प्रेम करने के लिए बाध्य करती हैं। इस कहानी में आज के नारी- पुरुष संबंधों में परिवर्तन की भूमिका का सशक्त अंकन है।

उसकी रोटी: पत्नी की असहायता, असुरक्षा और वैवाहिक जीवन की मजबूरियों को दर्शाती है।

जख्म: प्रेम और विवाहित स्त्रियों के संबंधों की जटिलता को छूती है।

सुहागिनें-इस कहानी में सुशील मनोरमा से एक पत्नी के अलावा भी कुछ और होने की कामना करता है। वह चाहता है कि पत्नी नौकरी करती रहे, ताकि उसके भाई-बहन पढ़ सकें और घर खर्च में भी मदद मिलती रहे। मनोरमा नौकरी करना नहीं चाहती। वह नौकरी छोड़कर घर में रहना चाहती है। अपने लिए बच्चा चाहती है जिसे वह खिला सके, अपना मन बहला सके। सुशील उसकी भावनाओं को नहीं समझता। "वह नहीं चाहता था कि अभी कुछ साल वे हुए एक बच्चे को घर में आने दें ।उससे एक तो उसका फिगर खराब होने का डर था, फिर उसकी नौकरी का भी सवाल था। सुशील नहीं चाहता था कि वह नौकरी छोड़कर बस घर- गृहस्ती के लायक ही हो रहे।"2

दोराहा: मोहन राकेश ने कहानी में महानगरीय जीवन में नारी पुरुष संबंधों के परिवर्तन को दर्शन है। केसरी महानगरीय यथार्थ से गुजरते हुए ही व्यक्ति के विकसित चरित्र को दर्शाते हैं। 'दोराहा' का केसरी जीवन में मिली असफलता से पीड़ा बटोरता है। वह जीवन के एक ऐसे दोराहे पर खड़ा है जहाँ उसकी प्रेयसी उस पर शक करती है। श्याम केसरी को छोड़कर शील के साथ चल देती है। वह अनिर्णय की स्थिति में दोराहे पर खड़ा है। वह सोचता है- स्त्री के रूप कितनी जल्दी बदल जाते हैं। केसरी ने इस संबंध को समाप्त करने का निश्चय कर लिया और वह श्यामा को अंतिम समय तक न समझने की भूल करता है।

फौलाद का आकाश: इस कहानी में रवि आधुनिकता की दौड़ में पति-पत्नी के बीच के मधुर संबंधों को महत्वहीन समझता है। यह एक व्यस्त पति और भावुक पत्नी के फौलाद की तरह ठंडे औपचारिक संबंधों की कहानी है। इस प्रकार **आर्द्रा**, प्रेम, विवाह और स्त्री-पुरुष संबंधों की जटिलता की कहानी है।

इन सभी कहानियों में दांपत्य जीवन की विडंबनाएं प्रमुख हैं।राकेश की कहानियों में पति-पत्नी के बीच संवाद की कमी, आर्थिक दबाव, सामाजिक अपेक्षाएं और व्यक्तिगत आकांक्षाओं का टकराव मुख्य विषय है। वे दिखाते हैं कि कैसे आधुनिकता ने पारंपरिक दांपत्य को चुनौती दी है, लेकिन नई संतुलन की तलाश अभी अधूरी है।

नाटकों और उपन्यासों में वैवाहिक विफलता

राकेश के नाटकों में दांपत्य संबंध और भी गहराई से उभरते हुए दिखाई देता है।

आधे अधूरे: आधे-अधूरे नाटक मोहन राकेश का सबसे चर्चित नाटक है ।सावित्री और महेंद्रनाथ का विवाह टूट चुका है। सावित्री आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के बावजूद भावनात्मक रूप से अधूरी है। नाटक मध्यवर्गीय परिवार के विघटन, स्त्री-पुरुष संबंधों की जटिलता और पूर्णता की निरंतर खोज को दर्शाता है।

मोहन राकेश के उपन्यासों में वैवाहिक जीवन की अर्थहीनता और अकेलापन साफ दिखाई देता है।

अंधेरे बंद कमरे: उपन्यास में भी वैवाहिक संबंधों की बंदिश और अंधेरा चित्रित है। अकेलापन साफ दिखाई देता है। इस उपन्यास की मुख्य पात्र 'नीलिमा' और 'हरबंस' के माध्यम से लेखक ने दिल्ली जैसे महानगर के उस दाम्पत्य जीवन को दिखाया है जहाँ दोनों एक ही छत के नीचे रहकर भी एक-दूसरे से कोसों दूर हैं। यहाँ प्रेम की जगह अहम् और अविश्वास ले लेता है। हरबंस स्वयं महसूस करता है कि वह पति की भूमिका ठीक से नहीं निभा पा रहा है। नीलिमा भी यही सोचती है कि वह पत्नी के रूप में ठीक नहीं है- "मैं मैड्रिड से चलते समय सोच रही थी कि मैं तुम्हारे जीवन में न रहूॅं, तो तुम कितने सुखी हो सकते हो। मैं ही तुम्हारे रास्ते में एक बाधा हूॅं। मैं ना रहूं, तो तुम इतने दुखी नहीं रहोगे।"3

<u>न आने वाला कल</u>: इसमें संबंधों के बीच की विसंगति, संवादहीनता और एक तरह के अकेलेपन का यथार्थ चित्रण है। इस उपन्यास में मनोज और शोभा के बीच तनाव संबंधों को ठीक से न निभा पाने का कारण है। हालांकि शोभा मनोज से विवाह तो करती है लेकिन फिर भी वह अपने पुराने पति को जिसके साथ वह 7 साल बिता चुकी है नहीं भूल पाती। हर चीज में वह उसे ही खोजती है। इसी कारण उनके संबंध वैसे नहीं रह पाते जैसे पति-पत्नी के बीच होने चाहिए। "लेखक ने इस प्रकार मनोज शोभा के दांपत्य- जीवन में परिवर्तन के बाद संगठन और संगठन में फिर परिवर्तन के बीच बोये हुए दिखाये है। शोभा मनोज के साथ किसी प्रकार कुछ दिन तक जीवन का भार उठाती है।" 4

मोहन राकेश ने दिखाया कि विवाह केवल सामाजिक संस्था नहीं, बल्कि दो व्यक्तियों के बीच निरंतर संघर्ष और समझौते का नाम है। उनकी रचनाओं में स्त्री अक्सर मजबूत लेकिन पीड़ित दिखती है, जबकि पुरुष असमंजस और असफलता का शिकार।

निष्कर्ष

मोहन राकेश ने नई कहानी आंदोलन के माध्यम से व्यक्तिवादी चेतना को बल दिया। वे यथार्थवाद और मनोवैज्ञानिक गहराई के साथ संबंधों को चित्रित करते थे। उनकी रचनाएं आज भी प्रासंगिक हैं क्योंकि दांपत्य की समस्याएं – जैसे काम-जीवन संतुलन, स्वतंत्रता बनाम जिम्मेदारी, और भावनात्मक अलगाव – आधुनिक भारत में बढ़ गई हैं। वे कहते थे कि उनकी कहानियां संबंधों की पीड़ा और अकेलेपन में जी रहे लोगों की यंत्रणा को दर्शाती है। मोहन राकेश दांपत्य संबंधों के सच्चे कथाकार थे क्योंकि उन्होंने चीनी-मिट्टी की जोड़ी की बजाय उसकी दरारों को दिखाया। उनकी लेखनी न केवल समस्या को उजागर करती है बल्कि पाठक को सोचने पर मजबूर करती है – क्या पूर्ण दांपत्य संभव है? या हम सब आधे-अधूरे ही रह जाते हैं?

संदर्भ ग्रंथ

1. मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ (एक और जिंदगी), पृष्ठ. सं.65

2.मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ(सुहागिनें) पृष्ठ.सं.154

3मोहन राकेश, अंधेरे बंद कमरे, पृष्ठ सं. 190

4. डॉ. उर्मिला भटनागर, व्यक्तित्व और कृतित्व पृष्ठ. सं. 153

5. मोहन राकेश: मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1989

6. मोहन राकेश: अंधेरे बंद कमरे, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1989

7. मोहन राकेश: न आने वाला कल, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली,1984

8.डॉ.कविता शनवारे:मोहन राकेश और उनका साहित्य,विकास प्रकाशन,प्रथम संस्करण 1999

9.डॉ.उर्मिलख मिश्र: आधुनिकता और मोहन राकेश, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी

10. ओम प्रभाकर: कथाकृति मोहन राकेश, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्रथमसंस्करण, 1992

11.डॉ. इंद्रनाथ मदान: हिंदी कहानी अपनी जुबानी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली